बाल मुकुन्द गुप्त के काव्य में राष्ट्रीय–भावना

डॉ. आर.पी. वर्मा,
असि. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
इन्दिरा गॉधी राजकीय महिलामहाविधालय,
रायबरेली, उ.प्र.

राष्ट्रीय भावना का आविर्भाव राष्ट्र के प्रति उत्कट प्रेम से होता है। यह एक ऐसी भावना है जिसका संबंध मनुष्य की अन्तर्चेतना से होता है। जब व्यक्ति संकीर्ण एवं साम्प्रदायिक भावना से ऊपर उठकर समग्र राष्ट्र तक प्रसारित हो जाता है, तब राष्ट्रीय चेतना का जन्म होता है। इस प्रकार राष्ट्र के पति अगाध ममत्व एवं अपनत्व की उत्कृष्ट भावना ही राष्ट्रीयता है। इसी भावना के कारण किसी भी देश के निवासी अपने देश पर बलिदान हो सकते है।

देश का स्वस्थ साहित्य वहां की संस्कृति, मानवता और राष्ट्रीय गौरव की प्रेरणा प्रदान करने का प्रमुख कारण होता है। कवि की प्रभावशालिनी काव्य चेतना समय समय पर जनमानस को सजग एवं सचेत करती रहती है। यही कारण है कि भारतीय इतिहास के पराभव काल में भी हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का अभाव नहीं रहा। यह दूसरी बात है कि उसका स्वरूप सदैव एक–सा नहीं रहा। इसके लिए समकालीन परिस्थितियों उत्तरदायी होती हैं।

देश–प्रेम की कविता में देश–भक्ति और राष्ट्रीय भावना अनेक रूपों में अभिव्यक्त होती है। इस प्रकार के काव्य में पहले तो अतीत के गौरव के प्रति कवि की विशेष आस्था होती है, जिसके द्वारा वह आत्महीनता का परिहार करता है। दूसरे, देश की वर्तमान दयनीय दशा का चित्रण करके देशवासियों का ध्यान उसकी ओर दिलाता है और उस पर आंसू बहाता हुआ गहरीी चिंता व्यक्त करता है। तीसेर, शासन की देश विरोधी नीति का उद्घाटन करते हुए उसका विरोध करता है तथा सधर्माज्य के पोषक जमींदार, पूंजीपति वर्ग और अन्य पीड़ा देने वाले तत्वों की कड़ी आलोचना करता है। चौथे, देश के नवयुवक और शिक्षित वर्ग का देश कल्याण के लिए आह्वान करता हुआ उनमें उज्ज्वल भविष्य के प्रति चेतना जाग्रत करता है।

बाल मुकुन्द गुप्त के काव्य में देशभक्ति की अभिव्यंजना के ये सभी रूप पाए जाते है। उन्होने प्राचीन गौरव का गान करके परम्परागत दासता एवं आत्महीनता की भावना का निवारण किया तथा प्राचीन वीरत्व, शौर्य और पराक्रम के चित्र अंकित किए है :–

जिनके क्षत्रन पर रही तरिवान करि छांह

अभय सवन को करत ही, जिनकी लम्बी बांह।।

कवि प्राचीन काल की सुख–समृद्धि का स्मरण करता है, जब भारतीय हाथी, घोड़ा, छत्र और सभी राजपाट रखते थे, किन्तु आज पेट भरने के लिए तरसते हैं।

गजरथ तुरंग विहीन भये ताको डर नाहीं।

चंवर छत्र को चाव नाहिं हमरे डर माहि।

सिंहासन अरू राजपाट को नाहिं उन हनों।

ना हम चाहत अस्त्र वस्त्र पट गहनो।

ये हाथ जोरि हम आज यह, रोम रोम विनती करें।

या भूखे पापी पेट कहं मात कहों कैसे भरैं।

वस्तुतः कवि की चिंता स्वाभाविक है, क्योकि अंग्रेजो की शोषणकारी नीति ने भारतीयों के पास भेट के लिए अन्न तक भी शेष नहीं छोड़ा था।

कवि ने प्राचीन भारत के परम शान्ति और सुखप्रद वातावरण सत्याचरण, पारस्परिक प्रेम व्यवहार तथा जातीय एकता का चित्र इस प्रकार अंकित किया है :–

कहां गए वह गांव मनोहर परम सुहाने।

सबके प्यारे शान्तिदायक मन माने।

कपट और क्रूरता पाप और मद से निर्मल।

सीधे सादे लोग बसै जिनमें नहिं छल बल।।

.....

एक भाव से जाति छतीसों मिलकर रहतीं।

एक दूसरे का दुख सुख मिल–जुलकर छल बल।।

कवि यथार्थ को देखकर दुखी होता है। वर्तमान जीवन महत् कष्ट एवं दरिद्रता से भरा हुआ है और वह सुनहरा अतीत अब स्वप्न बनकर रह गया है। चारों ओर वैमनस्य, असत्य, अज्ञान, दुराचार और शोक का आतंक छाया हुआ है।

अतीत का गौरव गान गाकर कवि द्वारा आज की गिरी हुई दशा की ओर देशवासियों का ध्यान आकृष्ट करना स्वाभाविक है। कवि ने देश की आर्थिक दुरवस्था, जनता के आलस्य और प्रमाद, अकाल और प्लेग तथा भारत के दरिद्रमय जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। दुख दारिद्रय से भारतीय अपना धैर्य गंवा चुके थे। वे उस दारूण दुखमय जीवन का अन्त ही कर देना अच्छा समझते थे। आत्मग्लानि से उनका हृदय भर उठा था। मानवजीवन कीड़े–मकौड़े से कहीं बदतर हो गया था। गुप्तजी ने उस दशा का यथार्थ चित्रण किया है :–

बार–बार मारी परत बारहिं बार अकाल।

काल फिरत नित सीस पैं, खोले गाल कराल।।

बार–बार जिय में उठत उच्च तो यह विचार।

ऐसे जीवन ख्वार पै लाख लाख धिक्कांर।।

विदेशी शासकों ने भारतीय जनता को दाने–दाने से मोहताज कर दिया था। भूखे मर–मरकर, शिक्षा आदि द्वारा जो कुछ अन्न कृषक गण इकट्ठा करते थे, उसे सरकारी पयोद, मुखिया, चौकीदार, जमींदार के सिपाही और कारिंदे छीन ले जाते थे। उन बेचारों के लिए पेट भरना भी दुष्कर हो जाता था। इन्हीं लोगों के लिए कवि आक्रोश भरे शब्दों में 'असुर' या 'दानव–दल' का प्रयोग करता है। इसी प्रसंग में कवि का कथन है

असुरन के डर निकस निकस जिजाय।

भिक्षा अरून मलिन बसन, सब गात है।

पेट भरन हित द्वार–द्वार विडरत है।

जो कुछ जोराहिं भीख मात दुख पायकै।

तुरत लेत हैलूट असुर तेहि आय कै।।

कवि के सम्मुख एक ओर तो सधम्राज्यवादी शासन तथा उसकी आधारशिला के रूप में जमींदार पूंजीपति, चाटुकार, राजे–महाराजे हैं तो दूसरी ओर देश का अभावग्रस्त दलित वर्ग है। कवि शोषक वर्ग को धिक्कारते हुए कहता है :–

हे ानियों! क्या दीन जनों की नहिं सुनते हो हाहाकार।

जिसका मरे पडौसी भूखा उसके भोजन को धिक्कार।।

गुप्तजी सत्ता शासकों एवं धनिकों की साधन सम्पन्नता एवं वैभव विलास–प्रियता को भली दुष्टि से नहीं देखते। वे उन्हें पड़ोसी धर्म की शिक्षा देते हैं। उनकी सहानुभूति दीन–हीन किसानों के साथ है।

अंग्रेजो द्वारा किए गए राजनीतिक सुधार तथा वैज्ञानिक सुविधाओं का भारत विरोधी मर्म कवि ने भली–भाति समझ लिया था। यही कारण है कि अंग्रेजो के पिट्ठू सर सैयद अहमद खां को संबोधित करते हुए वे लिखते हैं :–

प्रजा तुम्हारी दीन दुखी है रक्षा किसकी करते हो।

इससे क्या कुछ भी होता है नाहक पच पच करते हो।।

कवि ने अंग्रेजो के साम्राज्य सुरक्षा के भाव को समझ लिया था। साथ ही उसने इंग्लैंड के उदार तथ अनुदार दलों की वास्तविकता को भी अच्छी तरह जान लिया था। तथा भारत के लिए उन दोनों दलों की एक नीति थी – साम्राज्य संरक्षण। यह बात कवि ने 'पॉलिटिकल होली' नामक कविता में स्पष्ट रूप से अभियक्त की है –

जैसे मिन्टो वैसे कर्जन होली है भई होती है।

'कर्जन' अनुदार दल तथा 'मिन्टो' उदार दलीय नेता था, किन्तु भारत में दोनों का रूप शोषक का था। गुप्त जी ने इस तथ्य को जनता के समक्ष बड़ी कुशलता के साथ प्रस्तुत किया है। वस्तुतः भारतीय जनता की दीनता तथा अंग्रेजों के शोषण के चित्र अंकित करने में गुप्तजी पूर्ण समर्थ रहे हैं।

राष्ट्रीय चेतना के चौथे रूप के दर्शन वहॉ होतते हैं जहॉ कवि ने देश के युवावर्ग और बुद्धिजीवी वर्ग को देश हित के लिए प्रोत्साहित किया हैं तथा उनके सामने देश के उत्कृष्ट रूप व भविष्य की आशा के लिए प्रोत्साहित किया है तथा उनके सामने देश के उत्कृष्ट रूप व भविष्य की आशा तथा संभावनाओं को उपस्थित किया है।

बालमुकुन्द गुप्त की विचारधारा मानवतावादी थी। उन जीवन का कष्ट और विदेशी शासकों का नृशंस अत्याचार देखकर उनमें सामूहिक हित–चेतना का अधिक प्रसार हुआ है। उन्होने अपनी लेखनी की साधना से जनता में राष्ट्रीय विचारों का प्रसार कर जनता में आशातीत जागृति का श्री गणेश किया। देश के नवयुवक वर्ग को संगठित होकर देश पर बलिदान होने के लिए प्रेरित किया तथा उसके सम्मुख आत्मनिर्भरता स्वतंत्रता और स्वत्व प्राप्ति का एक मार्ग निर्दिष्ट किया। वे देश के नवयुवकों को एक होकर जीवन मरण की प्रतिज्ञा कराते हैं :–

आओ एक प्रतिज्ञा करें, एक साथ सब जीवें मरें।

भोग विलास सभी दो छोड़, बाबूपन से मुंह लो मोड़।

छोड़ो सभी विदेशी माल, अपने घर का करो ख्याल।

अपनी चीजें आप बनाओं, उनसे अपना अंग सजाओं।।

देश का आर्थिक शोषण रोकने के लिए गुप्तजी ने जनता के सम्मुख स्वदेशी वस्तुओं के उपभोग और निजी व्यापार पर बल दिया है :–

अपना बोया आप ही खावें, अपना कपड़ा आप बनावें

बड़े सदा अपना व्यापार, चारों दिस हो मौज बहार।

माल विदेशी दूर भगावें, अपना चरखा आप चलावें।।

बाल मुकुन्द गुप्त ने देश की शापित जनता को आशा और धैर्य दिलाने के लिए भविष्य के सुख स्वप्नों का भी चित्र उपस्थित किया है तथा उनके सम्मुख एक मनोरम राज्य की रूप रेखा प्रस्तुत की है। भविष्य के इन सुखद चित्रों की पृष्ठिभूमि में केवल यह भावना अन्तनिर्हित थी कि भारतीय शीघ्रातिशीघ उन चित्रों की ओर आकृष्ट हों, जिससे देश को शीघ्र स्वतंत्रता प्राप्त हो। उन्होंने राम राज्य का सुखद चित्र अंकित कर जनता को उसे प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया :–

सुखी रहे सब लोग रह्यो नित आनन्द छायो।

रह्यो तुम्हारे राज सदा प्रभु सब विधिसुन्दर।।

रामराज्य का यह सुखद चित्र था जिसकी कामना गुप्तजी भारतवर्ष के लिए करते थे। उनकी उत्कृष्ट अभिलाषा थी कि भारत में ऐसे राज्य की स्थापना हो :–

जहॉ मारी को डर नहीं अरू अकाल का त्रास।

जहॉ करै सुख सम्पदा, बारह मास निरास।

जहॉ प्रबल को बल नहीं, अरू निबलन की हाय।

एक बार सो दृश्य पुनि आंखिन देंहहु दिखाय।

इस प्रकार गुप्तजी की कविता में हृदय चेतना का विविध रूपों में प्रस्फुटन हुआ है। बाल मुकुन्द गुप्त ने प्रकृति का वर्णन भी राष्ट्रीय चेतना से ओत–प्रोत होकर किया है। उन्होने रीतिकालीन परम्परा से हटकर प्रकृति को स्वतंत्र रूप में ग्रहण किया है। उन्होने प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण करते समय केवल वृक्ष, फूल पत्ते, नदी, निर्झर तथा सरोवर आदि के नामों का परिगणन नहीं किया, अपितु प्राकृतिक सौंदर्य का निरीक्षण करने के उपरान्त होने वाली अनुभूति की अभियंजना की है।

बसंत के आ जाने पर प्रकृति में क्या परिवर्तन होते है? उसकी बदलती हुई परिस्थिति का गुप्तजी ने सचित्र वर्णन किया है :–

फिर सेमर पलास बन फूले, फिर फूले कचनार।

बौरे आम कोइलिया कूकी, आई बहुरि बहार।।

चटकत बहु गुलाब की कलिका, सौरभ बिखरी जाय।

मधुलम्पट मधुपनता ऊपर राखी लूट मचाय।

निरमल चंद चांदनी चारहूं ओर दई छिटकाय।

रैन दिवस समभये शीत को कोमल भयो सुभाय।।

इसी प्रकार गुप्तजी ने प्रकृति का बहु–आयामी चित्रण किया है। उन्होने जहां बसंत का चित्रण किया है वहीं अनावृष्टि के कारण शुष्क वनस्पति और झुलसी हुई प्रकृति का अंक भी किया है। उनका ग्रीष्म वर्णन दृष्टव्य है :–

सूखे वन उपवन परवत झुरि जरि गई घास।

डोलत खग मृग जीह निकासे निपट उदास।।

गुप्तजी ने प्रकृति के आलम्बन और उद्दीपन दोनों ही रूपों का चित्रण किया है, किन्तु आधिक्य आलम्बन रूप का ही रहा है। उद्दीपन रूप से प्रकृति को मुक्त करने, जीवन अनुभव और भाव को ही मुक्त करने की प्रक्रिया है नई चेतना के कारण ही प्रकृति के प्रति ऐसास रूख अपनाया जा सकता है। नदी, नाले, पर्वत, पेड़, पौधे आदि से प्रेम करना और इनमें सौंदर्य की अनुभूति करना प्रकारान्तर से सबमें राष्ट्रीय भावना ही निहित है।

वस्तुतः गुप्तजी ने प्रकृति का वर्णन देश–प्रेम के भावों से पूर्ण होकर किया है। अतीत के प्रति गौरव की भावना प्रायः कालों के साहित्य मे मिलती है। गुप्तजी ने अतीत की स्मृति और

वर्तमान की गिरी हुई दशा का भी चित्रण किया है। उनकी चेतना वर्तमान को स्वीकार करने और सुधारने के पक्ष में निर्मित हुई है। इसीलिए उनका उद्देश्य अतीत का गौरव गान करके वर्तमान की अद्योगति के कारणों को उघाड़ने और उसे बदलने के लिए संघर्ष करना है। उन्होंने जनता को इतिहास के गौरवशाली पृष्ठों का स्मरण कराते हुए परम्परागत दासतानुभूति एवं आत्महीनता की भावना का निवारण किया है।

इस प्रकार गुप्तजी की कविता में राष्ट्रीय भावना विविध रूपों में प्रस्फुटित हुई है। उनकी कविता वर्तमान यथार्थ को स्वीकार करने और सुधारने के पक्ष में निर्मित हुई है। उनकी कविता में अतीत का गौरवगान और वर्तमान की दुर्दशा पर चिन्ता, शासन की साम्राज्यवादी तथा देश विरोधी नीति का उद्घाटन हुआ है। उन्होने देश के नवयुवकों और शिक्षित वर्ग को देशहित के लिए प्रोत्साहित किया है।

स्पष्टतः बालमुकुन्द गुप्त भारतीय संस्कृति तथा आदर्श के प्रबल समर्थक थे। वे पतित साम्राज्यवादी संस्कृति के कृत्रिम आवरण के उन्मूलन पर बल देते थे। उन्होंने भारतीयों को सचेत करते हुए अपनी संस्कृति के प्रति प्रेम और श्रद्धा रखने का आह्वान किया है। यही नही उनकी राष्ट्रीय चेतना का आधार है।

संदर्भ

- बालमुकुन्द गुप्त निबंधावली (प्रथम भाग) श्री राम स्त्रोत, पृ0 582
- वहीं, जय लक्ष्मी पृ0 616
- वहीं, बसन्तोत्सव, पृ0 638
- वहीं, हे राम, पृ0 587
- वहीं, आगवानी, पृ0 598
- वही, (प्रथम भाग), सैय्यद का बुढ़ापा, पृ0 623
- वही, पृ0 629
- वहीं, पॉलिटिकल होली, पृ0 718
- वही, स्वदेशी आन्दोलन, पृ0 712
- वही, आशीर्वाद, पृ0 712
- वही, रामभरोसा, पृ0 585
- वही, पृ0 586
- वही, बसन्त, पृ0 659
- वही, मेघमनावनि, पृ0 645

Copyright © 2015, Dr. R.P.Verma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.